P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-6* February- 2019
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

स्वामी विवेकानन्द की शैक्षिक अवधारणा एवम् वर्तमान में प्रासंगिकता

अखलेश कुमार मीना
शोधार्थी,
शिक्षा संकाय,
मोहनलाल सुखाडिया,
विश्वविद्यालय,
उदयपुर, राजस्थान, भारत

सारांश

स्वामी विवेकानन्द मूलतः सन्यासी विचारक थें। परन्तु उनका चिंतन धर्म के साथ–साथ जीवन से जुड़े अन्य विषयों को समाहित किए हुए है जिनमें शिक्षापरक विचार प्रमुख है। स्वामी विवेकानन्द हमारे राष्ट्र के महान देश भक्त सन्त एवं उच्चतम अनुभूति वाले युग दृष्टा थें, मानव कल्याण एवं उत्थान उनका परम ध्येय था। वे एक अग्रणी चिन्तक थें जो आध्यात्मिक सत्यों का प्रतिपादन अत्यन्त सरल ढंग से करने के साथ–साथ विविध विषयों यथा विज्ञान, संगीत, कला, समाजनिर्माणकारी शिक्षा, व्यक्तित्व विकास की शिक्षा, चरित्र शिक्षा, शांति शिक्षा आदि पर सारगर्भित विवेचन भी प्रस्तुत करते रहे है। उनकी शैक्षिक अवधारणा नीति–प्रणेताओं, शिक्षकों विद्यार्थियों के लिये प्रेरणा के अविरल स्रोत रहे है। निम्न आलेख मे उनकी शैक्षिक अवधारणा और वर्तमान मे उनकी क्या प्रासंगिकता है पर प्रकाश डाला गया है।

मुख्य शब्द : सौहार्द–मैत्री, स्नेह प्रेम, विध्वंस–विनाश, बर्बादी, उत्कृष्टता–सर्वश्रेष्ठ, संकल्प शक्ति– किसी श्रेष्ठ अमूर्त चिंतन को जीवन कार्य व्यवहार में मूर्त रूप देना

प्रस्तावना

स्वामी विवेकानन्द जी के अनुसार शिक्षा आवश्यक रूप से मानव निर्माण की प्रक्रिया है। इसे यहाँ कई महत्वपूर्ण संदर्भो के माध्यम से रेखांकित किया गया है जिसमें मुख्य है कर्म तथा चरित्र, आदर्श नर एवं नारी नेतृत्व के गुण, कर्तव्य के प्रति समर्पण, कर्तव्यनिष्ठा, स्वदेश प्रेम तथा स्वातंत्र्य–बोध, व्यक्तित्व विकाश व चरित्र निर्माणकारी शिक्षा आदि। आज के वैश्विक युग में जिन व्यापक चिंताओं की ओर हमारा ध्यान जा रहा है, उनकें संदर्भ मे इन सारगर्भित मुद्दों के प्रति भारतीय समाज को समुचित रूप से तत्परता विकसित करनी है।

अध्ययन का उद्देश्य

स्वामी विवेकानन्द की शैक्षिक अवधारणा में निहित शिक्षा के उद्देश्य, लक्ष्य, पाठ्यक्रम, शिक्षक–शिक्षार्थी सम्बन्ध, स्त्री शिक्षा बाल केन्द्रित शिक्षा आदि को इस लेख के माध्यम से विधार्थी शिक्षक एवं बुद्धिजीवियों के समक्ष प्रस्तुत करना है ताकि इनके द्वारा सुझायी गयी शिक्षाओं द्वारा शिक्षा के विभिन्न क्षेत्रों में बदलाव लाया जा सके। क्योंकि स्वामी विवेकानन्द ने जिन मूल्यों व उद्देश्यों की परिकल्पना की उनकी तरफ आना वर्तमान में हमारी आवश्यकता है।

मानव निर्माणकारी शिक्षा

इस अवधारणा को स्पष्ट करते हुए स्वामी विवेकानन्द कहते है, सूचनाओं की मात्रा जो मस्तिष्क में ड़ाल दी जाती है और जीवन पर्यन्त बिना पचे वहाँ उथल–पुथल मचाती है, वह शिक्षा नही है। हमें जीवन निर्माणकारी, मानव निर्माणकारी, चरित्र निर्माणकारी समावेशी विचारों की आवश्यकता है। स्त्री–पुरूष के अन्दर देवत्व को अनावृत्व करना ही शिक्षा है। शिक्षा को सृजनात्मकता, मौलिकता तथा श्रेष्ठता पर सही रूप से बल देना चाहिए। अच्छी शिक्षा वही है जो मनुष्य की अन्तर्निहित शक्तिओं को प्रकट करती है। किसी भी मनुष्य का चरित्र वास्तव में उसकी अन्तर्निहित प्रवृतियों का समुच्चय है, मानस का सार है। उसके चरित्र निर्माण में सुख और पीड़ा कष्ट और आनन्द के तत्व समान रूप से उपस्थित है। महान किरदारों के अध्ययन से यह पता चलता है कि सुख से अधिक दुःख ने उन्हे शिक्षित किया है। स्वामी विवेकानन्द जी कहते है कि इच्छाशक्ति सर्वशक्तिमान है अगर कोई अपनी संकल्पशीलता का अनवरत प्रयोग करे तो वह अवश्य ही ऊँचाइयों को प्राप्त कर सकता है, यह संकल्प शक्ति या चरित्र ही है जो कठिनाइयों के घेरे को भेद सकता है। मनुष्य का कर्म उसकी शिक्षा की गुणवत्ता निर्धारित करता है। स्वामी जी कहते है विश्व में मानव समाज के समस्त कार्य और गतिविधियाँ मात्र मानव की संकल्पशीलता की

अभिव्यक्ति है तथा यह 'इच्छा शक्ति' चरित्र से निर्मित होती है और चरित्र का निर्माण कर्म के द्वारा होता है। नई पीढ़ी में नेतृत्व के गुण को विकसित करने मे अच्छी शिक्षा प्रणाली की आवश्यकता है। वेदान्त मनुष्य को सर्वप्रथम आत्मविश्वास जगाने की शिक्षा देता है। मानव सभ्यताओं से मुकावला करने हेतु शिक्षा द्वारा आत्मविश्वास की भावना जगानी होगी। स्वदेशप्रेम और स्वातत्रयबोध के विकास के लिए शिक्षा द्वारा तीन चीजे दी जानी चाहिए वे है– मातृभूमि के लिये प्रेम, अशुभ को परास्त करने की अदम्य अच्छा तथा इच्छित लक्ष्य की प्राप्ति के लिए अटूट दृढ़ता।

व्यक्तित्व विकास में शिक्षा का योगदान

स्वामी विवेकानन्द जी के अनुसार व्यक्ति का आभामण्डल, जिसका वह निर्माण करता है और दूसरों पर फैलाता है, व्यक्तित्व है। समस्त शिक्षा, समस्त शिक्षण का आदर्श मानव निर्माण होना चाहिए। सभी प्रकार की शिक्षा का अन्त और लक्ष्य व्यक्तित्व का सर्वांगिण विकास होना चाहिए। स्वामी विवेकानन्द जी ने व्यक्तित्व के सर्वांगिण विकास के लिये योग शिक्षा के महत्व को भी स्वीकार किया है उनका मानना था कि स्वस्थय तन मे ही स्वस्थ्य मन का निवास होता है। एक्रागता बढाने में योग शिक्षा का महत्वपूर्ण योगदान है।

चरित्र निर्माणकारी शिक्षा

स्वामी विवेकानन्द चरित्र निर्माणकारी शिक्षा की अवधारणा को स्पष्ट करते हुए लिखते है कि चरित्र निर्माण जो समाज का सर्वाधिक पवित्र उद्देश्य होना चाहिए पर अत्यधिक महत्व दिया। उनका तर्क था कि अन्य समस्त सम्पदाओं की तुलना में मात्र चरित्र–धन ही ऐसा है जो एक समाज मे खास पहचान देता है तथा उसके सदस्यों को बुनियादी शक्ति प्रदान करता है, ताकि वे कायम रहे। एक व्यक्ति का चरित्र उसकी समस्त प्रवृतियों का समुच्चय है, उसके समग्र मस्तिष्क का सार है शब्द गौण है, विचार शाश्वत है, वे सुदूरगामी है अतः विचारों के संदर्भ में सावधानी रखे। चरित्र निर्माण में अच्छे और बुरे दोनों की समान भागीदारी होती है और कुछ क्षेत्रों में सुख से अधिक कष्ट व्यक्ति को सिखाते है। विश्व के महान व्यक्तियों के जीवन के अध्ययन से हमें पता चलता है कि सुख से ज्यादा दुःख ने सम्पदा से अधिक दरिद्रता ने प्रशंसा से अधिक कष्ट के थपेडों ने उनके अन्दर की आग को प्रकाशित किया है। बुरी आदतों का तोड़ है विपरित आदते अर्थात हर बुरी आदत को अच्छी आदत द्वारा नियंत्रित किया जा सकता है। स्वामी विवेकानन्द कहते है कि चरित्र आदतों के दोहराने से बनता है और आदतों को दोहराने से चरित्र सुधरता है। वर्तमान समय में चरित्र निर्माणकारी शिक्षा की वेहद आवश्यकता है। चरित्र निर्माणकारी शिक्षा द्वारा ही समाज को सही दिशा प्रदान की जा सकती है।

शांति और सौहार्द के लिए शिक्षा

स्वामी विवेकानन्द जी कहते है कि मानवीय विध्वंस से बचाव का एकमात्र उपाय है शांति शिक्षा जो पृथ्वी पर मानव प्रजाति की रक्षा हेतु एक कवच है। वर्तमान समय में शांति और सौहार्द के लिए शांति शिक्षा की महती आवश्यकता है ताकि मानव मस्तिष्क में चल रहे युद्ध के प्रतिरोधक के रूप मे शांति की भावना स्थापित की जाए। स्वामी विवेकानन्द ने शांति को हिंसा की अनुपस्थिति के रूप में परिभाषित किया है। स्वामी जी के दर्शन अनुरूप, शांति का तात्पर्य, युद्व की अनुपस्थिति मात्र नहीं अपितु सभी क्षेत्रों में हिंसा का निषेध है। जिस प्रकार हिंसा या युद्ध का विचार मानव मन में होता है मनुष्य के मन में ही शांति एवं सौहार्द के विचार भरें जाने चाहिए । अतः सार रूप में यह कहा जा सकता है कि शांति की भावना इच्छाओं पर नियंत्रण के लिए मस्तिष्क के प्रशिक्षण, योग्यता एवं कामना के बीच संतुलन विविधताओं के प्रति सम्मान एवं सहिष्णुता तथा दूसरों के प्रति चिंता एवं प्रेम के भाव और प्रतिस्पर्धा से सहयोग की और उन्मुखता द्वारा संवर्धित की जा सकती है। वर्तमान समय में विद्यार्थियों मे शांति की भावना लाने के लिए एक ऐसी शिक्षा अपेक्षित है, जो सहकारी एवं परस्पर सहयोग की प्रवृति तथा स्वयं की अपेक्षा दूसरो के प्रति गहन चिंता के भाव को विकसित करे। इसके लिए एक ऐसी शिक्षा व्यवस्था की आवश्यकता है जिसकी परिकल्पना स्वामी विवेकानन्द जी ने बहुत पहले ही कर ली थी। शिक्षा ऐसी हो जो व्यक्ति की इच्छा शक्ति एवं उसके प्रवाह को नियंत्रण मे रखते हुए उसे फलदायिनी बनाया जा सकें।

शांति एक मनोदशा है। स्वामी जी के शिक्षा संबंधि विचारों से प्रेरणा लेते हुए यूनेस्को के संविधान की प्रस्तावना के अधोलिखित अभिकथन अत्यंत सुंदर ढंग से वर्णित किया गया है, " चूंकि युद्धों का प्रारम्भ मनुष्य के मन में होता है, शांति की सुरक्षा भी मनुष्य के मन मे ही निर्मित करनी होगी"।

संयुक्त राष्ट्र संघ की आमसभा ने अपने 15 जून 2007 के परित प्रस्ताव में 2 अक्टूबर (महात्मा गांधी का जन्म) गांधी जयन्ती को अंतर्राष्ट्रीय अहिंसा दिवस के रूप में मनाने का निश्चय किया है, जिससे अहिंसा का संदेश, जिसमें आम जनता की शिक्षा एवं जागरूकता भी सम्मिलित है, का प्रसार हो। इस प्रस्ताव मे पुनः इस बात पर बल दिया गया है कि अहिंसा के सिद्धान्त की सर्वभौम प्रासंगिकता स्वीकारी जाए तथा शांति की संस्कृति सहिष्णुता परस्पर अवबोध एवं अहिंसा प्राप्ति के संकल्प को बलवती बनाया जाए।

समानता एवं उत्कृष्टता के लिए शिक्षा

इस अवधारणा को स्वामी विवेकानन्द जी स्पष्ट करते हुए लिखते है कि शैक्षिक अवसरों की समानता से तात्पर्य है सही शिक्षकों द्वारा सही बालकों को सही शिक्षा प्रदान कराना जो राज्य के अन्तर्गत उपलब्ध साधनों के व्यय सामर्थ्य के अनुसार सामान्य शिक्षा और व्यावसायिक शिक्षा उपलब्ध कराती है। शैक्षिक अवसरों की समानता एक समतावादी लोकतांत्रिक एवं समाजवादी समाज द्वारा परिकल्पित सर्वोत्तम युक्ति है। यद्यपि इस अवधारणा पर विशेष ध्यान वर्तमान समाज में दिया गया है तथापि समानता के विचार की जड़े मानव सभ्यता के आदिकाल से ही जुड़ी हुई है। स्वामी विवेकानन्द के चिंतन द्वारा आत्मसात् एवं व्याख्याचित वेदांत दर्शन 'समता' एवं शैक्षिक अवसर की समानता को एक ठोस आधार प्रदान करता है। इससे घनिष्ठ रूप से जुडी उत्कृष्टता (श्रेष्ठता) की अवधारणा भी हैं, जिसकी स्वामी जी अपने विचारों एवं

कार्यो के माध्यम से एक वास्तविक प्रतिभूति थें। स्वामी विवेकानन्द जी का मानना था कि प्रत्येक भारतीय को न्यूनतम सार की जो गुणवत्तापूर्ण भी हो ऐसी शिक्षा प्राप्त होनी चाहिए। शैक्षिक अवसरों के वितरण मे छात्रों की नैसर्गिक योग्यताओं और क्षमताओं के विकास को मुख्य मानदण्ड मानना चाहिए। शैक्षिक अवसरों की उपलब्धता के साथ–साथ शैक्षिक योग्यता को उपयुक्त व्यवसाय या जीवन में उपयुक्त स्थान प्राप्त करने के साधन के रूप में अंगीकृत करना होगा। वर्तमान समय में व्यवसायिक शिक्षा की महती आवश्यकता है क्योंकि बेरोजगारी आज की सबसे बड़ी चुनौती और मुद्दा है। जिससे निजात पायी जा सकती है।

निष्कर्ष

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि शिक्षा को व्यवहार परिवर्तन की प्रमुख कडी मानते हुए स्वामी जी ने जीवन निर्माण, मानव निर्माण, चरित्र निर्माण, शांति एवं सौहादर्य के लिए शिक्षा एवं समानता व उत्कृष्टता के लिए शिक्षा के प्रमुख लक्ष्यों के रूप में स्वीकार किया है। स्वामी जी ने शिक्षा को सिर्फ जानकारी हासिल करने का साधन न मानकर व्यक्तित्व के विकास को शिक्षा का मूल उद्वेश्य माना है जो व्यक्ति के साथ–साथ जनकल्याण का मार्ग प्रशस्त करती हो। शिक्षा के अन्य उद्वेश्यों को निर्धारित करते हुए स्वामी विवेकानन्द जी ने आत्मनिर्भर, चरित्रवान, आत्मबल और स्वस्थ व्यक्तित्व निर्माण वाली शिक्षा पर बल दिया है। शिक्षक–शिक्षार्थी संबंधो पर भी स्वामी जी ने अपने विचार व्यक्त किए है। वे स्वीकार करते है कि बालक अनंत शक्तियों का पुंज है। उसकी शक्तियों की पहचान एवं वह जहॉ है वही से शिक्षा की शुरूआत ही शिक्षक का उत्तदायित्व है। स्वामी जी ने शिक्षक के अंदर ज्ञान, शुद्ध चरित्र एवं निःस्वार्थ सेवा जैसे गुणों को आवश्यक माना है। बालकों में मूल्य तभी निर्मित होगा जब शिक्षक मूल्यवान, एवं चरित्रवान होगा। दुनिया पवित्र और अच्छी तभी हो सकती है जब हम स्वयं पवित्र और अच्छे होगें। मानवीय करूणा एवं स्त्रियों की शिक्षा को भी वे समाज के लिए महत्वपूर्ण मानते थे। स्त्रियों की सभी समस्याओं के हल की मुख्य चाबी शिक्षा को मानते थें। आज से सवा सौ साल पूर्व जब शिक्षा में विषय या पाठ्यक्रम के महत्व को सर्वोपरि मानते हुए उसे रटने पर बल दिया जाता था। उस समय उन्होंने बालक के स्वतंत्र अस्तित्व की बात स्वीकार करते हुए बालक के अनुरूप शिक्षा की बात कही थी, जिसे बाल–केन्द्रित शिक्षा के रूप में वर्तमान समय में स्थान मिला है। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 में उनकी विचारधारा को स्वीकार किया गया है "बच्चे उसी वातावरण मे सीख सकते है जहाँ उन्हें लगे कि उन्हें महत्वपूर्ण माना जा रहा है। हमारे विद्यालय आज भी सभी बच्चों को ऐसा महसूस नही करवा पाते। सीखने का आनन्द व संतोष के साथ रिश्ता होने के बजाए भय, अनुशासन व तनाव से संबंध हो तो सीखने के लिए अहितकारी होता है।" स्वामी विवेकानन्द ने शिक्षा के जिन आयामों लक्ष्यों की बात कही है आज के संदर्भ में उसकी सार्थकता बढ़ जाती है। किसी भी शिक्षा व्यवस्था मे उसकी महती आवश्यकता है आज से सवा सौ साल पूर्व जिस बाल–केन्द्रित शिक्षा का बीज रोपा था उसके पल्लवित एवं विकसित रूप में आज हर बालक को महत्वपूर्ण माना जा रहा है। उन्होंने शिक्षा में जिन मूल्यों की बात की थी उनकी तरफ आना वर्तमान में हमारी जरूरत है। स्वामी विवेकानन्द ने शिक्षा के जिन उद्वेश्यों की परिकल्पना की है वह भारत के संदर्भ में बहुत ही सार्थक और प्रासंगिक है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

स्वामी विवेकानन्द का शिक्षा दर्शन, अरूण प्रकाशन दिल्ली संस्करण 2012, पृष्ठ 56

स्वामी विवेकानन्द का शिक्षा दर्शन, अरूण प्रकाशन दिल्ली संस्करण 2012, वही, पृष्ठ 11

स्वामी विवेकानन्द का शिक्षा दर्शन, अरूण प्रकाशन दिल्ली संस्करण 2012, वही पृष्ठ 13

स्वामी विवेकानन्द का शिक्षा दर्शन, अरूण प्रकाशन दिल्ली संस्करण 2012, वही पृष्ठ 11

स्वामी विवेकानन्द का शिक्षा दर्शन, अरूण प्रकाशन दिल्ली संस्करण 2012, वही पृष्ठ 14

स्वामी विवेकानन्द का शिक्षा दर्शन, अरूण प्रकाशन दिल्ली संस्करण 2012, पृष्ठ 57

मुमुक्षानंद, स्वामी, (2004) विवेकानंद साहित्य, खण्ड–4 अद्वैत आश्रम प्रकाशन, कोलकाता पृष्ठ 22

श्रीवास्तव, रश्मि . (2009) विवेकानंद के स्त्री शिक्षा संबंधी विचार (सार्थकता एवं प्रासंगिकता). भारतीय आधुनिक शिक्षा, वर्ष 30, अंक1, जुलाई 2009, पृष्ठ 116

स्वामी विवेकानंद का शिक्षा दर्शन, अरूण प्रकाशन दिल्ली, संस्करण 2012, पृष्ठ 63

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद–2006 राष्ट्रीय पाठ्यचर्चा की रूपरेखा–2005, नई दिल्ली, पृष्ठ 16

वर्मा, अरूण कुमार .(2013) स्वामी विवेकानन्द के शिक्षा संबंधी विचार–सार्थकता एवं प्रासंगिकता, भारतीय आधुनिक शिक्षा, वर्ष 34, अंक 1, जुलाई 2013, पृष्ठ 45

शर्मा, सरोज (2007), "शिक्षा एवं उदीयमान भारतीय समाज", जयपुर श्याम प्रकाशन।

सक्सेना, सरोज (2007), "शिक्षा के दार्शनिक एवं समाज शास्त्रीय आधार", आगरा, साहित्य प्रकाशन।